अतीन्द्रिय सुख

परमात्मा को कहा जाता है दुःख-हर्ता और सुख-कर्ता। बाबा दुःख भी दूर करता है और सुख भी देता है। इसी प्रकार, आपने दूसरों को दुःख नहीं दिया, बहुत अच्छा परन्तु उनका दुःख दूर करके सुख दिया? हमने पूरे दिन में कोई बुरा काम नहीं किया, निगेटिव नहीं किया, आगे के लिए कोई हिसाब-किताब नहीं बनाया, बोझ नहीं चढ़ाया यह तो अच्छा है लेकिन... आगे के लिए जमा किया...!

पवित्रता का सुख सबसे श्रेष्ठ सुख है। इसी में ईश्वरीय स्मृति(परमात्मा की याद) की रसना में मन तल्लीन हो जाता है, याद की रसना में डूब जाता है। इस सुख को कई लोग उपाधि कहते हैं, कई ऐक्य अवस्था कहते हैं, कई लवलीन अवस्था कहते हैं, वही अतीन्द्रिय सुख है। यह सुख सिर्फ योगी को मिलता है। खाने-पीने से, देखने-करने से जो सुख मिलता है वो यह सुख नहीं, उस सुख को इन्द्रिय सुख कहते हैं। मन को डायरेक्ट परमात्मा से जोड़ने से मन को जो सुख मिलता है इसको इन्द्रियातीत अथवा अतीन्द्रिय सुख कहते हैं। वो सुख केवल संगमयुग के थोड़े से समय में मिलता है। यह सुख अनमोल है, ये कल्प में एक ही बार प्राप्त होता है। जो चीज़ एक ही बार प्राप्त होती है उसका मूल्य और महत्त्व बहुत होता है। यह सुख तब मिल सकता है जब आप बाप समान बनें। बाप समान बनने का मतलब है पवित्र बनना और योगी बनना। जीवन में निर्मलता को लाने से ईश्वरीय स्मृति अथवा बाबा की याद में निन्तर रहने से यह अतीन्द्रिय सुख प्राप्त होता है। याद में अन्तर पड़ने से मन की स्थिति में भी अन्तर पड़ जाता है। निरन्तर बनाये रखने में बाधायें क्या हैं और उनका निवारण क्या है- इन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

पढ़ाई में ध्यान रखना और याद रखना बहुत ज़रूरी होता है। हम बाबा को क्यों भूलते हैं जबकि याद से हमारे जन्म-जन्मान्तर के विकर्म दग्ध होते हैं और हमारा भविष्य भी बनता है? बाबा कहते हैं बच्चे, अपना चार्ट रखो। हम चार्ट में देखते हैं कि हमने किसी को दुःख तो नहीं दिया और किसी से दुःख लिया तो नहीं? ठीक है, दुःख न दिया और न लिया लेकिन सुख दिया? दुःख नहीं दिया तो इसका अर्थ हुआ कि आपने विकर्म नहीं किया। परन्तु सुकर्म किया? परमात्मा को कहा जाता है दुःख-हर्ता और सुख-कर्ता। बाबा दुःख भी दूर करता है और सुख भी देता है। इसी प्रकार, आपने दूसरों को दुःख नहीं दिया, बहुत अच्छा परन्तु उनका दुःख दूर करके सुख दिया? हमने पूरे दिन में कोई बुरा काम नहीं किया, निगेटिव नहीं किया, आगे के लिए कोई हिसाब-किताब नहीं बनाया, बोझ नहीं चढ़ाया यह तो अच्छा है लेकिन आगे के लिए जमा किया? पाप न करके पुराना खाता बढ़ाया नहीं, कम किया लेकिन खाते में पुण्य जमा तो नहीं हुआ। बुरा नहीं किया जिसकी सज़ा न मिले, भविष्य में जो प्राप्ति होगी वह किस आधार पर होगी? अच्छा करोगे तो अच्छा पाओगे। किसी को अपने मन-वचन-कर्म से मन की राहत दी? शान्ति और सुख दिया? किसी को ठीक रास्ते पर लगाया? जो आपको बाबा ने गुण दिया है, ज्ञान दिया है, शक्ति दी है, रूहानियत दी है वह किसी को दी? वो नहीं दी तो आपने किसी को अतीन्द्रिय सुख दिया नहीं। अगर नहीं दिया है तो इसका अर्थ यह हुआ कि आपके पास वो चीज़ है ही नहीं। आपने अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया ही नहीं है इसलिए किसी को आपने दिया नहीं।

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जैसी हमारी स्थिति होती है वैसी हमारी कृति होती है। हमारे कर्म हमारी स्थिति पर आधारित हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, अन्तर पड़ जाता है और याद निरन्तर नहीं रह सकती। अन्तर क्यों पड़ता है, उसके कई कारण बाबा ने बताये हैं। लेकिन हम बच्चे भूल जाते हैं। एक बच्चे की कहानी सुनाते हैं ना! माँ ने अपने बच्चे को कहा, यह 10 रूपये लेकर जाओ और दुकान से 10 रूपये के मूँग ही लाना, चने नहीं। वह बच्चा रास्ते में, 10 रूपये की मूँग की दाल, 10 रूपये की मूँग की दाल कहता गया, याद रखने के लिए। बीच रास्ते में कोई खेल चल रहा था। उसको देखते हुए रूक गया। थोड़े समय के बाद याद आया कि उसको दुकान जाना है, तो फिर चल पड़ा। उस दृश्य को देखने के कारण वह भूल गया कि कौन-सी दाल लेनी है। वह लेकर गया चने की दाल। जिस काम के लिए वह गया था वही भूल गया। उसी प्रकार, बाबा ने भी हमें कहा कि शिव बाबा को याद करो, देहधारियों को याद न करो। फिर भी हम शिव बाबा को भूल जाते हैं और देहधारियों को याद करते हैं। क्यों ऐसा होता है?

सब दुकानें किसी-न-किसी दिन बंद होती हैं। लेकिन दो कान हमेशा खुले रहते हैं। आँखें बंद कर सकते हैं, मुँह बंद कर सकते हैं, लेकिन कानों को कभी बंद नहीं करते। जब हम दो कानों से दूसरों की व्यर्थ बातें सुनते हैं। जिसको बाबा झरमुई-झगमुई कहते हैं तो इससे हमारा समय, शक्ति सब व्यर्थ चला जाता है। इसलिए हम अपने कान ठीक काम में लगा दें। देखिये, स्कूल में कोई बच्चा गलती करता है तो उसको कान पकड़ाते हैं अथवा उसको मुर्गा बनाते हैं। उसमें भी उस बच्चे को अपने ही कानों को पकड़ना पड़ता है। सारा शरीर पड़ा है फिर भी उसके कानों को क्यों पकड़वाते हैं? क्योंकि कोई भी व्यक्ति बुरा सोचता है, बुरा बोलता है और बुरा करता है लेकिन उससे पहले उसने बुरा सुना होता है। बुरा सुनना ही सब बुराइयों की बुनियाद है। अगर वह बुरा सुनेगा नहीं तो उसकी बुद्धि उस तरफ जायेगी ही नहीं। तो पहले दो कानों रूपी दुकान को बंद करना है। अगर मौहल्ले में दंगा होता है तो पहले दुकान ही बंद करते हैं इसलिए बाबा कहते हैं, बुरा सुनना, व्यर्थ सुनना बंद करो। बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बुरा मत बोलो। पहले कहा जाता है, बुरा मत सुनो। सुनने से ही गड़बड़ होती है।

बाबा कहते हैं मेरी बातें ही सुनो, देखो, बोलो। बच्चों को कान पकड़वाते हैं कि आगे से ऐसी बात नहीं सुनूँगा। निरन्तर याद में अन्तर आने का कारण है बुरा अथवा व्यर्थ बातें सुनना। दूसरा है ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करना। जब ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन करते हैं तो शिव बाबा की याद भूल जाती है। शिव बाबा को भूलने से अन्य के प्रति घृणा आनी शुरू होती है। मानो किसी ने आपका काम बिगाड़ दिया, आपके रास्ते में उसने रूकावट डाल दी, किसी के सामने आपकी इनसल्ट कर दी अथवा कोई ऐसा नुकसान पहुँचा दिया तो आपको बार-बार उस व्यक्ति के प्रति रोष आता रहेगा, उसकी याद आती रहेगी और परमात्मा की याद से कोसों दूर चले जायेंगे। जिसके प्रति घृणा हो, द्वेष हो, वैर-विरोध हो वो भी ज़्यादा याद आयेगा। जैसे किसी के प्रति आपकी ज़्यादा प्रीत होती है तो वो बहुत याद आयेगा। और जिसके प्रति नफ़रत और ईर्ष्या, द्वेष हो तो वो बहुत याद आयेगा। आमतौर पर व्यक्ति को ये दो ही याद आते हैं बाकी सब भूल जाते हैं।

मालीगांव-गुवाहाटी(असम)। माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंता बिस्वा शर्मा को उनके 53वें जन्मदिन पर उनके निवास स्थान पर गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. मेधाबती बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

नांदेड़-महा.। महिला आयोग महाराष्ट्र की अध्यक्ष पद पर नियुक्ति होने पर राज्यमंत्री रुपाली ताई चाकणकर का सम्मान करने के साथ ही नांदेड़ सिटी,पुणे मीरा सोसायटी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. ललिता बहन ने उन्हें संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराया व संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया। इस मौके पर 'वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स,लंदन' द्वारा राज्यमंत्री रुपाली चाकणकर को सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट,स्वीटज़रलैंड देकर राष्ट्रीय सचिव डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके द्वारा सम्मानित किया गया।

बागपत-उ.प्र.। दैनिक जागरण के वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप राघव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपक भाई,मा.आबू तथा ब्र.कु. गीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. भारत भूषण भाई व ब्र.कु. ललिता बहन।

ओलपाड-सूरत(गुज.)। राष्ट्रीय किसान दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. तृप्ति बहन,राष्ट्रीय संयोजिका,ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़। कार्यक्रम में गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनें उपस्थित रहे।

छतरपुर-म.प्र.। 'खुशियों का बिग बाज़ार' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. शक्तिराज भाई,मा.आबू., सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, पुलिस उपमहानिरीक्षक विवेक राज सिंह, आरईएस कार्यपालनयंत्री जे.पी. आर्य, जिला खेल अधिकारी,स्कूल शिक्षा विभाग श्रीकांत द्विवेदी, शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय क्र.1 के प्राचार्य एस.के. उपाध्याय, दूर संचार विभाग टीडीएम सत्तीदीन प्रजापति, कोषालय अधिकारी जिला पन्ना गौरव गुप्ता, लायंस क्लब अध्यक्ष संजय अग्रवाल, चार्टर्ड अकाउण्टेंट अरविंद गुप्ता, डॉ. नितेश गुप्ता तथा अन्य गणमान्य लोग।

उज्जैन-म.प्र.। महात्मा गांधी की 74वीं पुण्यतिथि,विश्व शांति दिवस पर कैथोलिक चर्च में आयोजित कार्यक्रम में चारधाम पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर शांति स्वरूपानंद जी, बालयोगी उमेशनाथ जी, मुस्लिम धर्म से शहर काजी, सिक्ख धर्म से सुरेन्द्र सिंह अरोड़ा, बोहरा समाज से कुतुब फातेमी, चर्च से बिशप सेबेस्टियन वडकल आदि धर्म प्रतिनिधियों सहित ब्रह्माकुमारीज़ से ब्र.कु. मंजू दीदी उपस्थित रहे।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर थीम के अंतर्गत महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की जयंती एवं बसंत पंचमी की पूर्व संध्या पर छतरपुर के जाने-माने साहित्यकार काव्य शिरोमणि सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' जी के सम्मान समारोह में आयोजित काव्य गोष्ठी में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, बुंदेलखंड के वरिष्ठ साहित्यकारों में श्रीनिवास शुक्ल, भैयालाल व्यास, गंगाप्रसाद बरसैंया आदि, लक्ष्मण दास सर्राफ फर्म से ओमप्रकाश अग्रवाल, कवि अशोक नगायच, स्वतंत्र प्रभाकर रावत, प्रमोद सारस्वत, राघवेन्द्र उदैनिया विमल बुंदेला, प्रभा विधु, नम्रता जैन, नीतेंद्र परमार, सुरेन्द्र शर्मा'सुमन', अजय मोहन तिवारी, अभिषेक अरजरिया, जीतेन्द्र यादव आदि कविजन सहित प्रो. बहादुर सिंह परमार, वरिष्ठ पत्रकार रविंद्र अरजरिया, अजय दोसाज, श्याम अग्रवाल, हरि अग्रवाल, सुरेंद्र अग्रवाल आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

हल्द्वानी-रामपुर रोड(उत्तराखण्ड)। हल्द्वानी में एक मास के मेले के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी में भुवन लाल शाह,मुख्य प्रशासनिक अधिकारी,तराई सिंचाई विभाग,नैनीताल, लाल सिंह बिष्ट,मुख्य प्रशासनिक अधिकारी,सिंचाई नलकूप खण्ड,रामनगर, अमित जैन,लेक्चरर,इंटरकॉलेज आदि गणमान्य लोगों को प्रदर्शनी समझाने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. वीना बहन, ब्र.कु. नीलम बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

इंदौर-म.प्र.। नई दुनिया प्रेस द्वारा आयोजित सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर जी के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में मोमबत्ती जलाकर लता जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सद्गुरु अन्नाजी महाराज, गुरुसिंह सभा के अध्यक्ष मंजीत सिंह भाटिया, इंदौर प्रेस क्लब के अध्यक्ष अरविन्द तिवारी, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से ब्र.कु. हेमलता दीदी व ब्र.कु. अनीता दीदी तथा अन्य गणमान्य लोग।

हाथरस-उ.प्र.। विश्व कैंसर दिवस पर कैंसर पीड़ितों और कैंसर से जान गंवाने वालों की आत्मा की शांति हेतु श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. शान्ता बहन सहित बड़ी संख्या में भाई-बहनें उपस्थित रहे।